ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे... समय बदला, रास्ते बदले, लेकिन अटूट रिश्ता आज भी कायम

दोस्तों ने साझा किया दोस्ती का यादगार सफर

नव भारत न्यूज

इंदौर. ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे... समय के साथ जिंदगी की रफ्तार भले बदल गई, रास्ते बदल गए, लेकिन कुछ दोस्तियां आज भी वही भरोसा और अपनापन लिए कायम हैं. कुछ दोस्त सिर्फ कहानियों का हिस्सा नहीं होते, बल्कि जिंदगी का अहम हिस्सा बन जाते हैं. शहर के लोगों ने ऐसी ही यारियों के किस्से साझा किए, जहां दोस्त हर मोड़ पर साथ खड़े रहने वाले साथी बन गए. दोस्ती का रिश्ता उम्र, दूरी और हालात से नहीं बदलता. फ्रेंडशिप डे पर शहर से सामने आईं ऐसी ही कुछ यारियों की कहानियां, जो बताती हैं कि सच्चा दोस्त मुश्किल वक्त में सबसे बड़ा सहारा होता है.

39 वर्षों से अटूट है दोस्ती का रिश्ता

आज के दौर में जहां रिश्ते अक्सर स्वार्थ और समय की कसौटी पर कमजोर पड़ जाते हैं, वहीं रणवीर सिंह रघुवंशी और उनके परम मित्र देवेंद्र सोनी की दोस्ती पिछले 39 वर्षों से सच्चे विश्वास, आत्मीयता और अपनत्व की मिसाल बनी हुई है. वर्ष 1987 में शुरू हुई यह मित्रता आज भी उसी मजबूती और सम्मान के साथ कायम है. रणवीर सिंह रघुवंशी ने बताया कि उनकी दोस्ती की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि दोनों के बीच कभी किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं रहा. जीवन के हर सुख-दुख, उतार-चढ़ाव और कठिन परिस्थितियों में दोनों एक-दूसरे के साथ मजबूती से खड़े रहे. समय के साथ यह रिश्ता और अधिक गहरा होता गया. दोनों मित्रों ने अपने परिवारों के साथ कई धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों की यात्राएँ भी की हैं. इन यात्राओं की यादें आज भी उनके जीवन की अमूल्य धरोहर हैं. सच्ची मित्रता जीवन की सबसे अनमोल पूंजी होती है, जिसे विश्वास, सम्मान और निस्वार्थ भाव से जीवनभर संजोकर रखना चाहिए.

रणवीर-देवेन्द्र

समय की हर कसौटी पर खरी उतरी इनकी मित्रता

बुरा समय आने पर सगे रिश्तेदार भी साथ छोड़ देते है लेकिन एक दोस्त ने दूसरे दोस्त का किसी भी समय साथ नहीं छोड़ा. लक्की वर्मा ने अपने बाल सखा आकाश परमार के बारे में बताया कि गुजराती स्कूल की मित्रता अनवरत जारी है. 18 साल में एक दिन ऐसा नहीं हुआ जब मिले ना हो. मेरे बुरे समय में आकाश चट्टान की तरह साथ खड़ा रहा. आज जो भी हूं उसकी दोस्ती का कद्रदान हूँ. आकाश कहते है कि लक्की जैसा दोस्त मिलना भाग्य की बात है. हम दोनों के लिए तो रोज फ्रेंडशिप डे है.

वक्त बदला, उम्र बदली....नहीं बदली मधुर-शत्रु की जोड़ी

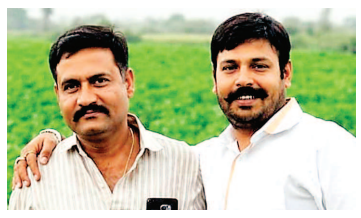

कहते है जो सारे दुखों को अस्त कर दे वहीं दोस्त है। एक दूसरे के दु:खों को अस्त करने वाली ऐसी ही एक जोड़ी है मधुर (नानू) भाटी और शत्रुघ्न शर्मा की। 35 साल के दोस्ताना संबंध का यह अनवरत सफर जारी है. मधुर बताते है कि स्कूल, कॉलेज, शादी से लेकर एक दूसरे के सुख-दुख के साथी है. शत्रुघ्न शर्मा ने कहा कि एक दूसरे के पड़ोसी का सफर अब पारिवारिक हो गया है. शोले फ़िल्म का एक गाना है 'ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे' इसे गुनगुनाकर दोस्ती कायम रहेगी.

दोस्ती जीवन की अनमोल पूंजी

दोस्ती वह रिश्ता है जो न खून के रिश्तों से बंधा होता है और न ही किसी उम्र, जाति, भाषा या हैसियत का मोहताज होता है. यह दिल से दिल तक पहुँचने वाला वह अनमोल एहसास है, जहाँ केवल अपनापन, विश्वास और सच्चाई मायने रखते हैं. बचपन में मिट्टी में खेलते हुए बने दोस्त हों, स्कूल की शरारतों के साथी हों, युवावस्था के हमसफ़र हों या जीवन की संध्या में सुख-दुख बाँटने वाले मित्र- हर दौर में दोस्ती का रंग अलग होता है.

क्रिकेट के मैदान पर पनपी दोस्ती, दूसरी पीढ़ी निभा रही साथ

शहर में क्रिकेट का एक ग्रुप ऐसा भी है जिनकी वर्षो पुरानी दोस्ती को खेल के मैदान में उनकी दूसरी पीढ़ी बखूबी आगे बढ़ा रही है. बचपन का गली क्रिकेट 45 साल बाद भी जारी है. रविवार को सभी दोस्त क्रिकेट खेलने और एक दूसरे के सुख-दुख बाँटने के लिए क्रिकेट के मैदान पर होते है. हैरान करने वाली बात यह है कि उनकी सेकंड जनरेशन उनकी विरासत को आगे बढ़ाने का काम कर रही है. क्लब के जितेन्द्र उपाध्याय बताते है कि मोहल्ले के पड़ोसी बनने से शुरू हुआ सफर आज पारिवारिक बन गया है. 45 साल पहले क्रिकेट से शुरू हुई दोस्ती अब सेकंड जनरेशन भी निभा रही है. घर के पते बदलने के बाद भी दोस्ती और दिल का पता एक ही है. क्रिकेट के अलावा एक दूसरे के अच्छे बुरे और सुख-दुख के सथी है. रविवार को क्रिकेट की पिच पर खेल और खट्टी मीठी शरारत का आनंद ही दुर्गेश पाल, भरत गेहलोत, संजय वर्मा, संजय सोलंकी, चीकू चौहान, विशाल खड़ायते, मुकेश उपाध्याय, संजय जोशी, गौरी पालीवाल, पप्पू वर्मा की मित्रता की पूंजी है.

12 साल की दोस्ती : कभी कम नहीं हुआ विश्वास और अपनापन

दोस्ती सिर्फ साथ बिताए गए पलों का नाम नहीं होती, बल्कि यह भरोसे, अपनापन और हर मुश्किल में एक-दूसरे का सहारा बनने का रिश्ता है. ऐसी ही एक मिसाल हैं हिमांशु, मेहुल और राहुल, जिनकी दोस्ती पिछले 12 वर्षों से लगातार मजबूत होती चली आ रही है. स्कूल के दिनों में शुरू हुआ यह साथ आज भी उतना ही खास है। समय के साथ पढ़ाई, करियर और जिम्मेदारियां बढ़ीं, लेकिन इन तीनों दोस्तों के बीच का अपनापन कभी कम नहीं हुआ. बचपन की शरारतें, स्कूल की यादें, साथ घूमना, हंसना और हर खुशी-गम में एक-दूसरे का साथ देना उनकी दोस्ती की सबसे बड़ी पहचान है. फ्रेंडशिप डे के मौके पर यह दोस्ती बताती है कि सच्चे दोस्त सिर्फ अच्छे समय के साथी नहीं होते, बल्कि मुश्किल दौर में भी बिना किसी स्वार्थ के हमेशा साथ खड़े रहते हैं. यही विश्वास और अपनापन उनके रिश्ते को आज भी पहले जैसा मजबूत बनाए हुए है. आज की तेज रफ्तार जिंदगी में जहां रिश्ते अक्सर समय के साथ बदल जाते हैं, वहीं हिमांशु, मेहुल और राहुल की 12 साल पुरानी दोस्ती यह संदेश देती है कि अगर रिश्तों में भरोसा, सम्मान और सच्चाई हो तो समय भी उन्हें कमजोर नहीं कर सकता. फ्रेंडशिप डे पर इन तीनों दोस्तों की कहानी हर युवा के लिए एक प्रेरणा है कि सच्ची दोस्ती उम्र या दूरी की मोहताज नहीं होती, बल्कि दिलों के जुड़ाव से हमेशा जीवित रहती है.

स्वच्छता के साथ यातायात में भी बने भारत का आदर्श शहर

सपने में अक्सर हम आदर्श या सबसे सुंदर बातें ही देखते हैं. शहर के विकास के लिए भी सपना आदर्श होगा. एक ऐसा शहर इंदौर हो जहां चौड़ी और खुली खुली सड़के हों. ट्रैफिक की गुत्थम गुत्था ना हो. सड़कों के दोनों तरफ और बीच में हरे-भरे घने पेड़ हों. सभी कॉलोनियों में बगीचे हों. बच्चों के लिए खेल के मैदान हों. पानी की समुचित व्यवस्था हो. ये सारी सुव्यवस्थाएं एक आदर्श शहर में होनी चाहिए... ऐसा मेरा सपना है लेकिन इंदौर को लेकर चुनौतियां बहुत सारी हैं.

नवभारत
कैसा हो सपनों का इंदौर

एक तो यह कि पुराना शहर होने से छोटी गलियां, छोटी सड़कें हैं और इसी वजह से ट्रैफिक की सुगमता भी नहीं है. हालांकि सपनों को यथार्थ के धरातल पर लाना कठिन कार्य तो होता है मगर जब सपना साकार हो जाए तो खुशियां चार गुना हो जाती हैं. यही इंदौर के विषय में भी है. हालांकि पुराने इंदौर को लेकर हम ज्यादा कुछ कर नहीं सकते लेकिन नया इंदौर जो बस रहा है आसपास वहां हम अपने सपनों का शहर विकसित कर सकते हैं, जितनी भी टाउनशिप विकसित हो रही हैं उनमें भी हरियाली कम है. हरे और बड़े पेड़ जंगल में से लाकर टाउनशिप में लगाएं जाएँ तो इंदौर की आबो हवा और स्वास्थ्यवर्धक हो जाएगी. आसपास के छोटे कस्बों से आने वाले लोग इंदौर में बसना चाहते हैं, इंदौर को अपनाना चाहते हैं, ऐसे में इंदौरवासियों का फर्ज है कि उन्हें ऐसा शहर दें जो वह सपनों में ही देखा करते हैं. हम सफाई में तो नंबर वन हैं, हमने एक अनुशासित और योजनाबद्ध तरीके से इंदौर को स्वच्छतम शहर में बदल दिया है. क्या हमारे पास योजनाएं हैं कि हम इंदौर के यातायात को सुगम बना दें!

चलिए कुछ बिंदुओं पर विचार करते हैं. कैसे आखिर यातायात श्रेष्ठ हो जाए? बात आती है सबसे पहले ही कि हमारी आदत है हम यातायात के नियमों का पालन नहीं करते हैं. बस यही से अव्यवस्थाएं शुरू होती हैं. जैसे पहले हम कचरा घर के सामने फेंक दिया करते थे लेकिन अब सुव्यवस्थित तरीके से कचरा इकट्ठा करने वाली गाड़ी में डालते हैं वैसे ही यातायात के नियमों को पालन करना होगा अपने लिए और शहर के लिए भी. मैंने सुना है कि इंदौर शहर में जुलाई तक 400 मौतें दुर्घटनाओं से हो गई हैं। आखिर क्या वजह है? इन घटनाओं के लिये क्या सिर्फ प्रशासन जिम्मेदार है? क्या सिर्फ सड़कें दोषी हैं? या सबसे ज्यादा दोष नागरिकों का है कि वह अपनी जिम्मेदारियां का पालन ठीक से नहीं कर रहे हैं. हम उन बच्चों को दो पहिया वाहन दे रहे हैं जो अभी इस काबिल ही नहीं हुए हैंय क्यों ऐसे लोगों को लाइसेंस मिल जाता है? यह भी सोचने का विषय है! अब सड़कें चौड़ी की जा रहीं हैं. प्रयास चारों तरफ से हो रहे हैं लेकिन नागरिकों की तरफ से कोई प्रयास नहीं हो रहा. हम क्या ऐसा करें कि इंदौर का यातायात पूरे भारत के लिए एक उदाहरण बन जाए. इसके लिए कुछ उपाय करने होंगे, जैसे यातायात के नियमों का पालन, एक सही उम्र में दो पहिया वाहन चलाना, अंधाधुंध गति से गाड़ी ना चलाना, चौराहे पर अत्यधिक तेजी से गाड़ी ना चलाना, जब तक रेड सिग्नल हो गाड़ी आगे ना बढ़ाना, ज़ेबरा क्रॉसिंग का पालन, वृद्धों और बच्चों के लिए फुटपाथ. यह जब तक नहीं होता हम कैसे यातायात को सुगम करेंगे.

एक महत्वपूर्ण सुझाव और देना चाहूंगा जो पूरे वर्ष भर में 60 से 70 जुलूस सड़कों पर निकलते हैं जो विभिन्न पार्टियों या विभिन्न धर्मों के हो सकते हैं या अन्य अवसरों पर हो सकते हैं. इन्हें बंद किया जाना चाहिए. हालांकि इन निर्णय को कठोर निर्णय कहा जा सकता है पर कठोर निर्णय से ही शहर की छवि और तस्वीर बदलेगी.

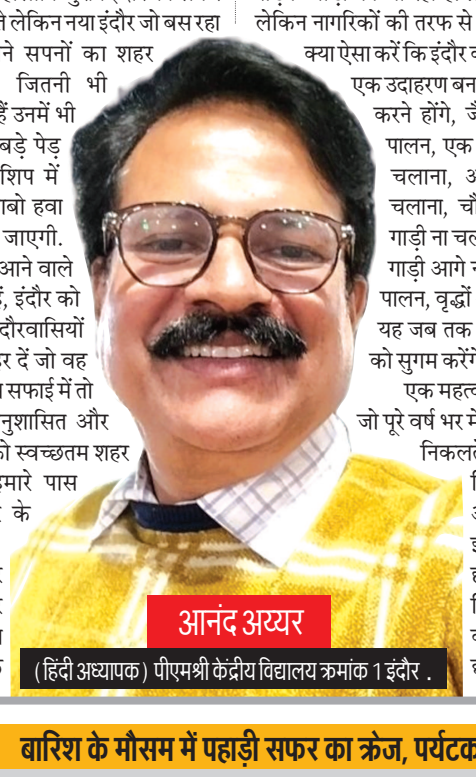

आनंद अय्यर
(हिंदी अध्यापक) पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 इंदौर.

सुरों के कारवां ने बांधा समां, सदाबहार गीतों से सजी संगीत संध्या

इंदौर. शनिवार की शाम जाल सभागृह संगीत की मधुर स्वर लहरियों से गूंज उठा, जब संस्था हार्मनी द्वारा आयोजित संगीत संध्या 'सुरों का कारवां' में शहर के प्रतिभाशाली कलाकारों ने एक से बढ़कर एक सदाबहार और लोकप्रिय गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं. कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित संगीत प्रेमियों ने कलाकारों का उत्साहवर्धन तालियों की गड़गड़ाहट से किया.

कार्यक्रम का शुभारंभ मधुर गीतों के साथ हुआ. वरिष्ठ गायक डॉ. प्रमोद झवर ने 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू', 'ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे' और 'सागर किनारे दिल ये पुकारे' जैसे सदाबहार गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं को पुरानी यादों में खो जाने पर मजबूर कर दिया. गायिका शीतल अत्रे ने अपनी भावपूर्ण और सशक्त आवाज़ में 'तुझे याद न मेरी आई' तथा 'मेरे ढोलना' जैसे गीत प्रस्तुत किए. उनकी शास्त्रीय संगीत से सजी प्रस्तुति ने सभागृह में उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया और खूब सराहना बटोरी. गायक आशीष जैन ने 'कभी बेकसी ने मारा' और 'चांदनी रात में' जैसे भावपूर्ण गीतों की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम में भावनात्मक रंग घोल दिया. वहीं आदित्य शर्मा एवं दीपाली मोहरील की युगल प्रस्तुति ने भी दर्शकों का दिल जीत लिया. दोनों कलाकारों ने 'तुम्हे अपना बनाने की कसम' तथा 'मुझे रात दिन' जैसे 90 के दशक के लोकप्रिय गीतों को शानदार अंदाज में प्रस्तुत किया.

कार्यक्रम में विशेष आकर्षण कोटा से पधारे एलेन के प्रतिनिधियों की प्रस्तुति रही. गोविंद माहेश्वरी ने 'कभी-कभी मेरे दिल में' गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं की खूब वाहवाही लूटी, जबकि केशव माहेश्वरी ने 'रंग शरबतों का' गीत गाकर पूरे सभागृह को तालियों से गूंजा दिया. कार्यक्रम का प्रभावी एवं रोचक संचालन विद्याधर मुले ने किया. मधुर संगीत, उम्दा गायकी और शानदार प्रस्तुतियों से सजी यह संध्या संगीत प्रेमियों के लिए लंबे समय तक यादगार बनी रहेगी.

राखी स्पेशल फैशन एंड लाइफस्टाइल एग्ज़ीबिशन

इंदौर. रक्षाबंधन पर्व को ध्यान में रखते हुए शहर के होटल सयाजी में आयोजित राखी स्पेशल फैशन एंड लाइफस्टाइल एग्ज़ीबिशन शनिवार को आकर्षण का केंद्र रही. प्रदर्शनी में सुबह से ही बड़ी संख्या में लोग पहुंचे और राखी, डिजाइनर कपड़े, ज्वेलरी, गिफ्ट आइटम, होम डेकोर एवं अन्य लाइफस्टाइल उत्पादों की जमकर खरीदारी की. आयोजकों के अनुसार प्रदर्शनी में विभिन्न शहरों से आए डिजाइनर और व्यापारियों ने अपने स्टॉल लगाए हैं तथा प्रवेश नि:शुल्क रखा गया है. प्रदर्शनी में डिजाइनर सूट का स्टॉल लगाने वाली शानू ने बताया कि मैं यहां डिजाइनर सूट बेच रही हूं. एग्ज़ीबिशन में अच्छी बिक्री हो जाती है और रक्षाबंधन के कारण काफी भीड़ खरीदारी के लिए आ रही है. लोगों को एक ही स्थान पर कई तरह की वैरायटी मिल जाती है, जिससे खरीदारी करना आसान हो जाता है. रक्षाबंधन के मद्देनज़र आयोजित इस प्रदर्शनी में महिलाओं और युवतियों की विशेष भीड़ देखने को मिली.

विद्यालय में हुए छात्र संसद चुनाव, कल आएंगे परिणाम

इंदौर. बजरंग नगर स्थित शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को छात्र संसद के गठन के लिए मतदान प्रक्रिया उत्साहपूर्वक संपन्न हुई. विद्यालय के शिक्षकों के मार्गदर्शन में प्रत्येक कक्षा से पांच-पांच विद्यार्थियों को मतदान प्रक्रिया में शामिल किया गया. छात्रों ने पूरे उत्साह और अनुशासन के साथ अपने मताधिकार का प्रयोग किया और खुद चुनाव चिन्ह बनाएं और हर एक क्लास में जाकर खुद के लिए मतदान मांगा.

विद्यालय प्रबंधन के अनुसार इस चुनाव के परिणाम सोमवार को घोषित किए जाएंगे. विजयी विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री सहित विभिन्न छात्र नेतृत्व पदों की जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी. इन छात्र प्रतिनिधियों को पूरे शैक्षणिक सत्र के दौरान विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों, अनुशासन, स्वच्छता, कार्यक्रमों के संचालन तथा अन्य व्यवस्थाओं में शिक्षकों के साथ मिलकर महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाने का अवसर मिलेगा. विद्यालय के शिक्षकों ने बताया कि छात्र संसद का यह चुनाव प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता है. इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता, जिम्मेदारी की भावना और टीमवर्क का विकास करना है. इस पहल से छात्र मतदान की प्रक्रिया को व्यवहारिक रूप से समझते हैं और नेतृत्व के गुण विकसित करते हैं. विद्यालय में चुनाव को लेकर विद्यार्थियों में विशेष उत्साह देखने को मिला तथा सभी को अब परिणाम का बेसब्री से इंतजार है.

एक नजर में — बारिश के मौसम में पहाड़ी सफर का क्रेज, पर्यटकों ने महसूस की 'सतपुड़ा की रानी' की खूबसूरती

मानसून में पहाड़ों का बढ़ता ट्रेंड, पचमढ़ी बना सुकून की पसंद

पचमढ़ी. मानसून आते ही घूमने-फिरने का ट्रेंड बदल जाता है. बारिश की फुहारों के बीच पहाड़ों की ओर घूमने निकलना लोगों को खासा पसंद आता है. हरियाली से ढकी पहाड़ियां, बादलों से घिरी चोटियां, बहते झरने और सुहाना मौसम मानसून में पहाड़ी पर्यटन को और आकर्षक बना देते हैं.

यही वजह है कि बारिश के मौसम में बड़ी संख्या में लोग पहाड़ी इलाकों का रुख करते हैं. मध्यप्रदेश में पचमढ़ी इस मानसून ट्रेंड का एक खूबसूरत विकल्प बनकर सामने आती है. इसी मानसूनी मौसम में पचमढ़ी की प्राकृतिक खूबसूरती को करीब से महसूस कराने के लिए ट्रिपवाले.इन द्वारा विशेष पर्यटन यात्रा का आयोजन किया गया. यात्रा का नेतृत्व ट्रिपवाले.इन के संस्थापक अतुल मंडलोई ने किया. यात्रा में शामिल पर्यटकों ने पचमढ़ी के विभिन्न पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया और अपने अनुभव साझा किए.

बी फॉल में झरने ने बांधा मन: बारिश के मौसम में पचमढ़ी के झरने अपने पूरे शबाब पर नजर आते हैं. बी फॉल पर पर्यटकों ने प्रकृति के इसी खूबसूरत रूप को करीब से महसूस किया. युधिष्ठिर ने बताया कि बी फॉल का कल-कल बहता झरना और चारों ओर फैली हरियाली मन को सुकून देने वाली है.

बारिश के बाद यहां का वातावरण और भी खूबसूरत नजर आता है. यात्रा के दौरान जटाशंकर गुफा भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रही. माया वर्मा ने जटाशंकर को आस्था और प्रकृति का अद्भुत संगम बताया. चट्टानों के बीच बनी गुफा का प्राकृतिक स्वरूप जहां रोमांच का अहसास कराता है, वहीं इसका धार्मिक महत्व पर्यटकों को आस्था से जोड़ता है.

मानसून में पहाड़ क्यों बनते हैं पहली पसंद?

मानसून में पहाड़ों का नजारा पूरी तरह बदल जाता है. गर्मियों की सूखी पहाड़ियां बारिश के बाद हरियाली से भर जाती हैं. जगह-जगह झरने नजर आने लगते हैं और बादलों की आवाजाही सफर को यादगार बना देती है. इसी प्राकृतिक बदलाव को देखने और महसूस करने के लिए मानसून में पहाड़ी पर्यटन का क्रेज बढ़ जाता है. आज का पर्यटक सिर्फ किसी जगह पर जाकर तस्वीरें खींचना नहीं चाहता, बल्कि वहां के मौसम, प्रकृति और माहौल को जीना चाहता है. इसी वजह से मानसून में पहाड़ी सफर एक पसंदीदा ट्रैवल ट्रेंड बन चुका है. पचमढ़ी इस ट्रेंड को पूरी तरह सार्थक करती नजर आती है. यहां प्रकृति, झरने, पहाड़, आस्था और रोमांच एक साथ मिलते हैं. ट्रिपवाले.इन की यात्रा में भी पर्यटकों ने पचमढ़ी को सिर्फ देखा नहीं, बल्कि बारिश के मौसम में उसकी खूबसूरती को करीब से महसूस किया. यही अनुभव इस सफर को तस्वीरों से आगे ले जाकर एक यादगार मानसून ट्रैवल स्टोरी बन गया.

विनम्रता मनुष्य का वास्तविक आभूषण : नित्यसेनसूरीश्वर

इंदौर. चातुर्मास पर नवकारसी एवं शाही करबा सहित अनेक कार्यक्रमों में हजारों श्रद्धालु शामिल हुए. केशरी वाटिका में चेतना, भक्ति एवं श्रद्धा के अद्भुत संगम का मिलन हुआ. आचार्य विजय नित्यसेनसूरीश्वर ने कहा कि संसार में संयोग और वियोग अनादिकाल से चलते आ रहे हैं, परंतु अज्ञान के कारण जीव अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाता। मनुष्य को जीवन में झुकना सीखना चाहिए, क्योंकि विनम्रता ही उसकी रक्षक है। आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए नम्रता आवश्यक है. उन्होंने कहा कि धर्म से दूरी का सबसे बड़ा कारण अज्ञान है. प्रत्येक व्यक्ति को सोच-समझकर कार्य करना चाहिए क्योंकि कर्मों का फल निश्चित रूप से भोगना है. परमात्मा भी कर्मफल को परिवर्तित नहीं कर सकते. इसलिए समय रहते आत्मचिंतन एवं आत्ममंथन आवश्यक है, अन्यथा अंत में केवल पश्चाताप ही शेष रह जाता है. आचार्य सिद्धरत्न विजयजी ने प्रवचन में कहा कि प्रत्येक आत्मा को यह विचार करना चाहिए कि जन्म-मरण के अनंत चक्र से मुक्ति कैसे प्राप्त हो. यही मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य है.